आदिवासी बच्चों के लिए बहुभाषी शिक्षा | वसन्तशाला से प्राप्त सबक

संध्या गज्जर और सोनल बक्षी

भाषा अनुसन्धान और प्रकाशन केन्द्र, वडोदरा की स्थापना 1996 में पद्मश्री डॉ. गणेश देवी द्वारा की गई थी। उन्होंने एमएस यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा में अँग्रेज़ी साहित्य के प्रोफ़ेसर पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली क्योंकि वे लुप्तप्राय या मृतप्राय भाषाओं को लेकर चिन्तित थे और तत्सम्बन्धी शोध को आगे बढ़ाना चाहते थे। अपने शोध के क्रम में उन्होंने पाया कि जिन भाषाओं के लुप्त होने की सम्भावना सबसे अधिक थी उनमें से अधिकांश आदिवासी और खानाबदोश समुदायों की थीं। कई महत्त्वपूर्ण कारणों में से एक कारण यह था कि इन भाषाओं की लिपि नहीं थी और वे ज़्यादातर केवल मौखिक रूप में ही मौजूद थीं।

यह सर्वविदित है कि आदिवासी सन्दर्भों में सामाजिक संकेतक एक निराशाजनक तस्वीर पेश करते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि शिक्षा, आदिवासी समूहों के सन्दर्भ और सामाजिक वास्तविकता का हिस्सा कभी नहीं रही और इस कारण यह उनके लिए अवास्तविक और अप्रासंगिक हो गई। जैसा कि बताया जाता है, अन्य सुविधावंचित वातावरण में शिक्षकों का बच्चों के साथ उतना जुड़ाव नहीं होता है और आदिवासी वातावरण में तो यह दूरी और भी बढ़ जाती है। यह सर्वविदित है कि इन खाइयों को पाटने के लिए शिक्षक-समुदाय के गहन जुड़ाव और मातृभाषा व प्रथम भाषा पर आधारित शिक्षा पर अधिक ज़ोर देने की आवश्यकता है।

चुनौतियाँ

चूँकि भारतीय राज्यों को भाषाई आधार पर विभाजित किया गया है और गाँव के सरकारी स्कूलों में शिक्षा का माध्यम राज्य भाषा होती है, इसलिए यही नियम आदिवासी गाँवों के स्कूलों पर भी लागू होता है। इन स्कूलों में शिक्षकों की नियुक्ति एक केन्द्रीकृत प्रक्रिया है और इसके परिणामस्वरूप आदिवासी क्षेत्रों से बहुत दूर के ज़िलों के ग़ैर-आदिवासी शिक्षकों को, आदिवासी स्कूलों में तैनात किया जा सकता है। इसलिए काग़ज़ों में यह मामला भले ही सरल और स्पष्ट लगता हो, लेकिन कक्षा में यह अत्यधिक जटिल हो जाता है।

1. आमतौर पर ग्रामीण बच्चे लगभग 6 साल की उम्र में सीधे पहली कक्षा में जाते हैं। उन्हें शहरी स्कूलों के नर्सरी-जूनियर-सीनियर किंडरगार्टन वर्षों की अर्ध-औपचारिक सुरक्षात्मक/तैयारी का कोई अनुभव नहीं मिल पाता। कई ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्व-प्राथमिक स्कूल के रूप में आँगनवाड़ियाँ/बालवाड़ियाँ हैं और पूर्व-प्राथमिक स्कूल शिक्षा में कई शिक्षक और समूह कार्यरत हैं जो शिक्षणशास्त्र और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) में इन्हें सशक्त बनाने की कोशिश कर रहे हैं, फिर भी पहली कक्षा के पाठ्यक्रम के लिए बच्चे को तैयार करने में भारतीय गाँवों के सैकड़ों आँगनवाड़ियों/बालवाड़ियों का योगदान और प्रभाविता स्थापित नहीं हो पाई है।
2. प्रत्येक राज्य के बोर्ड के पाठ्यक्रम के अनुसार, कक्षा 1 में बच्चे से यह अपेक्षा की जाती है कि वह पूर्ण वाक्य पढ़ने और लिखने में सक्षम हो और एक अंकीय जोड़/घटाव कर सके। यदि कक्षा के अधिकांश बच्चों ने कभी ऐसा न किया हो या वे ऐसा न कर सकते हों तो शिक्षक के लिए यह बात एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आती है।
3. यह स्थिति तब और भी कठिन हो जाती है जब शिक्षक की भाषा (शिक्षण का माध्यम) और बच्चे की भाषा समान न हो। दोनों एक-दूसरे को समझ ही नहीं पाते।
4. कक्षा में जो कुछ हो रहा है, उसे न समझ पाने के कारण अधिकांश बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं और फ़िर उन्हें शायद ही कभी स्कूल में वापस लौटने का अवसर मिलता हो।

इस समस्या के समाधान के लिए तैयार किए गए साधनों में से एक यह था कि प्रत्येक आदिवासी भाषा के लिए सचित्र शब्दकोष डिज़ाइन किए जाएँ, जो 1200-1500 शब्दों का एक सरल-सा सचित्र अंकन है जिसे 6 वर्ष की आयु वाला (कक्षा 1 में प्रवेश की आयु) एक औसत बच्चा समझ लेता है। इसमें आदिवासी भाषा के प्रत्येक शब्द को एक चित्र के माध्यम से दिखाया जाता है और फिर उसका अनुवाद करके गुजराती/अँग्रेज़ी/हिन्दी भाषा में वह शब्द तथा उसका अर्थ भी प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षक, (ग़ैर-आदिवासी या वह व्यक्ति जो उस क्षेत्र की भाषा से अपरिचित है, जहाँ वह तैनात है) स्कूली क्षेत्र में प्रमुखता से बोली जाने वाली भाषा के सचित्र शब्दकोष का उपयोग कर सकता है और कक्षा में बच्चों के साथ संवाद करने के लिए उस भाषा का उपयोग कर सकता है। शब्दावली का प्रभावशाली तरीक़े से उपयोग करने में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए सरल एक दिवसीय कार्यशालाओं को डिज़ाइन किया गया है ताकि वे प्रचलित भाषा में, आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले शब्दों और वाक्यांशों को सीख सकें। गुजरात में हमारे कुछ शब्दकोषों का उपयोग सर्वशिक्षा

अभियान द्वारा किया जाता है; इन्हें उन क्षेत्रों के विद्यालयों के शिक्षकों को दिया जाता है जहाँ मुख्यतः आदिवासी भाषा बोली जाती है। अब तक हमने सोलह सचित्र शब्दकोष बनाए हैं- आदिवासी भाषाओं के लिए बारह और खानाबदोश भाषाओं के लिए पाँच।

वसन्तशाला मॉडल

भाषा[i] ने 2005 में आवासीय स्कूल कार्यक्रम, वसन्तशाला शुरू किया। इससे पहले हमने वडोदरा में बड़े निर्माण स्थलों पर भवन का निर्माण करने वाले मज़दूरों के बच्चों (ज़्यादातर छोटा उदयपुर क्षेत्र के आदिवासी परिवारों) के लिए ग़ैर-औपचारिक स्कूली शिक्षा का संचालन किया था। उसके बाद पंचमहल और छोटा उदयपुर तालुका / ज़िलों के गाँवों में स्कूल जाने वाले बच्चों के साथ कई वर्षों तक काम किया था। इस प्रकार हमें कई वर्षों का अनुभव भी हो चुका था। यह सीमित वर्ष की परियोजनाएँ थीं और जब वे समाप्त हो गईं तो विद्यार्थियों को फ़िर से उनके ही साधनों पर छोड़ दिया गया। हमने महसूस किया कि काम का यह तरीक़ा बच्चों के लिए बहुत अनुचित था और इसलिए हमने ख़ुद एक स्कूली शिक्षा-कार्यक्रम चलाने का फ़ैसला किया।

इस प्रकार वसन्तशाला की संकल्पना की गई। हम बहुत ग़रीब और प्रवासी परिवारों से 6 से 12 वर्ष के ऐसे साठ लड़कों और लड़कियों को भर्ती करते हैं जो स्कूल नहीं जाते या जिन्हें स्कूल जाने का कोई मौका नहीं मिलता। पहले दो वर्षों में हमने देखा कि यह बच्चे आमतौर पर राठवा, डूंगरा भीली, तड़वी और भीली आदिवासी समुदायों के थे। प्रत्येक समुदाय की अपनी भाषा है जिसे यह बच्चे बोलते थे। उन्हें राज्य की भाषा गुजराती भी ज़्यादा नहीं आती थी। वे सिवाय अपनी भाषा के अन्य तीन आदिवासी भाषाओं में से शायद ही किसी भाषा को समझ पाते थे। इसलिए हमारे पास भले ही सिर्फ़ साठ बच्चे थे लेकिन भाषाओं का एक जटिल मिश्रण था। जिन आदिवासी शिक्षकों के साथ हमने काम किया, वे कुछ शिक्षित तो थे, लेकिन उनकी मुख्य योग्यता थी विद्यार्थियों द्वारा बोली जाने वाली सभी भाषाओं को सीखने की उनकी इच्छा और क्षमता। लेकिन इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण था उनका शिक्षण के प्रति लगाव, कक्षा में सफलता के साथ अपना कार्य कर पाने की उनकी क्षमता और बच्चों के लिए उनका प्रेम।

वसन्तशाला का शिक्षणशास्त्र

शैक्षिक वर्ष की शुरुआत में (अब नए सरकारी नियमों के अनुसार, वर्ष 2020 से अप्रैल में) सभी नव-प्रवेशित बच्चों का उनके अधिगम के स्तर, सिखाई हुई बातों को समझने की क्षमता, अभिक्षमता, सामाजीकरण के पैटर्न और किसी विशेष प्रतिभा के आधार पर आकलन किया जाता है क्योंकि हो सकता है कि उनमें से कुछ पहले भी स्कूल गए हों। उनके अधिगम के स्तर और क्षमताओं के आकलन के विश्लेषण के आधार पर शिक्षक प्रत्येक बच्चे के आयु-उपयुक्त शिक्षण स्तर का निर्धारण करते हैं और उन्हें सीखने के पाँच समूहों में विभाजित करते हैं :

क) जागृति : ग्रेड 1 और 2

ख) प्रकृति : ग्रेड 3 और 4

ग) संस्कृति : ग्रेड 5

घ) स्वकृति : ग्रेड 6

ङ) प्रगति : ग्रेड 7

लेकिन बच्चा किसी विषय-विशेष में अपनी क्षमता के अनुसार एक या एक से अधिक समूहों में भाग लेने के लिए स्वतन्त्र होता है। आकलन एक सतत प्रक्रिया है। वैसे औपचारिक जाँच-परीक्षाएँ हर तीन महीने में आयोजित की जाती हैं और शिक्षक अवलोकन, कक्षा-कार्य एवं भागीदारी आदि के माध्यम से बच्चों की प्रगति पर नज़र रखते हैं। हमने पाया है कि अधिकांश आदिवासी बच्चे अकादमिक बातें बहुत जल्दी सीख जाते हैं और साथ ही उनमें व्यावहारिक समझदारी भी काफ़ी होती है जो लोगों के साथ सामान्य अन्तःक्रिया करने में उनकी मदद करती है।

वसन्तशाला में शैक्षिक विषय और विषयवस्तु गुजरात बोर्ड के पाठ्यक्रम के समान ही हैं। यहाँ पर एक प्रशिक्षु इस बात से बहुत प्रभावित था कि जिस कक्षा का वह अवलोकन कर रहा था उसमें शिक्षक ने ऐसे विद्यार्थियों को नगरपालिका के विचार को बहुत अच्छी तरह से समझाया जिन्हें लोक-प्रशासन में सरपंच से ऊपर के पदों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। क्या बच्चे समझ गए? हाँ, अवश्य, उनमें से बहुत से बच्चों ने सवाल पूछे और उनके सवालों के जवाब देने से शिक्षक को अवधारणा को और भी स्पष्ट रूप से समझाने में मदद मिली।

हालाँकि कक्षाएँ तुरन्त शुरू हो जाती हैं लेकिन बच्चों को शुरुआती हफ़्तों में इस बात के लिए समय दिया जाता है कि वे नए परिवेश के साथ तालमेल बिठाएँ, दोस्त बनाएँ, कक्षा में पढ़ाई के लिए वापस आएँ, अपने शिक्षकों को बेहतर तरीक़े से जानें और अकादमी में दूसरों के साथ परिचित हों। आमतौर पर अगस्त-सितम्बर तक एक नया बैच स्कूल के वातावरण से परिचित हो जाता है और तब शिक्षक और बच्चे अपना ध्यान पूरी तरह से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में लगाते हैं। इसलिए इन छह महीनों के दौरान अधिक गहन कक्षा कार्य होता है। अधिगम प्रक्रिया के पूरक के रूप में पाठ्येतर गतिविधियों को भी डिज़ाइन किया गया है।

[i]भाषा रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन सेंटर की स्थापना 1996 में भारत में आदिवासी समुदायों को 'आवाज़' देने के उद्देश्य से की गई थी। भाषा के द्वारा आदिवासी अकादमी की स्थापना गुजरात के छोटा उदयपुर जिले के तेजगढ़ में की गई है।

चूँकि बच्चे तीन या चार भाषा समुदायों (राठवी, भीली, चौधरी,तड़वी) के हैं, इसलिए शुरुआती महीनों में बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है। वसन्तशाला की यह प्रथा है कि कक्षा में और उसके बाहर भी शिक्षकों और अन्य बच्चों के साथ बातचीत करते समय, खेलते समय और अन्य पाठ्येतर गतिविधियों के दौरान उन्हें अपनी मातृभाषा में बोलने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता है। जब अन्य बच्चे और शिक्षक इन भाषाओं को सुनते हैं तो धीरे-धीरे अन्य लोग भी उनका उपयोग करना शुरू कर देते हैं। शिक्षक उनका उपयोग भाषा सहित अन्य सभी विषयों के लिए करते हैं। यह प्रक्रिया बच्चे को अपनी भाषा पर गर्व महसूस करने में मदद करती है और वे आत्मविश्वास के साथ उसका उपयोग करते हैं। लेकिन इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस विधि के कारण जैसे-जैसे बच्चे की समझ बढ़ती है, वैसे-वैसे उसे अपने अध्ययन - पढ़ाई-लिखाई में रुचि बढ़ाने में भी मदद मिलती है।

एक बार जब कोई बच्चा अपनी मातृभाषा में बुनियादी साक्षरता हासिल करना शुरू कर देता है तो उसे गुजराती और धीरे-धीरे हिन्दी, संस्कृत और अँग्रेज़ी भाषा के सम्पर्क में लाया जाता है और हाँ, कक्षा द्वारा बोली जाने वाली आदिवासी भाषाओं का प्रयोग तो निश्चित रूप से होता ही है। यह बात वसन्तशाला को वास्तव में बहुभाषी बनाती है। पिछले दो वर्षों से जर्मनी के, गैप-इयर के दो विद्यार्थी, प्रशिक्षु के रूप में वसन्तशाला में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं और बच्चों ने उन्हें गुजराती सिखाते समय कुछ जर्मन वाक्यांशों और गीतों को सीख लिया है।

अधिगम की खाई को पाटना

सितम्बर और मार्च के बीच, शिक्षक उन बच्चों के अधिगम की खाई को पाटने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं जिन्हें नियमित स्कूलों की मुख्यधारा में लाना हो क्योंकि तब तक उनकी उम्र मुख्यधारा के स्कूल के उपयुक्त हो गई होती है। सरकारी आवासीय विद्यालयों में उनकी क्षमताओं के अनुसार उन्हें कक्षा 5 या 6 में दाख़िला लेने के लिए तैयार किया जाता है ताकि वे अपनी स्कूली शिक्षा सफलतापूर्वक पूरी कर सकें। इन स्कूलों का चयन बच्चे की योग्यता और स्कूल की बच्चे के परिवार के गाँव से निकटता के आधार पर किया जाता है। हर साल औसतन 30 बच्चों को मुख्यधारा में शामिल करवाया जाता है और अधिकांश बच्चे दसवीं कक्षा की परीक्षाओं में सफल होते हैं।

वार्षिक-योजना का एक नमूना

वसन्तशाला कार्यक्रम वर्ष में लगभग 300 दिनों तक विद्यार्थियों के साथ कार्य करता है। यहाँ वार्षिक-योजना (जून 2016 से अप्रैल 2017) का एक नमूना प्रस्तुत है :

माह	गतिविधियाँ
जून	वसन्तशाला के मौजूदा विद्यार्थियों का आगमन। यह सुनिश्चित करना कि पिछले शैक्षिक वर्ष में मुख्यधारा में लाए गए विद्यार्थी अपने नए स्कूलों में अच्छी तरह से समायोजित हो गए हैं। नए विद्यार्थियों की पहचान और भर्ती। शिक्षण और सभी पाठ्येतर गतिविधियाँ शुरू करना। पुस्तकों और स्टेशनरी को व्यवस्थित करना। एक जोड़ी नए कपड़े और सैंडल के लिए बच्चों का नाप लेना। पहला सत्र मुख्यतः कक्षा-शिक्षण पर केन्द्रित होता है क्योंकि बारिश के कारण बाहरी गतिविधियाँ नहीं करवाई जा सकतीं।
जुलाई	शिक्षण और गतिविधियाँ जारी रहती हैं। नए बच्चों की समायोजन में मदद की जाती है।
अगस्त - सितम्बर	शिक्षण और गतिविधियाँ जारी रहती हैं। त्यौहार मनाए जाते हैं। नवरात्रि / दशहरे की छुट्टियाँ का अवकाश।
अक्टूबर	अनौपचारिक मध्यावधि परीक्षा का आयोजन।
अक्टूबर-नवम्बर	27 अक्टूबर से 9 नवम्बर तक दीवाली का अवकाश।
नवम्बर	दूसरे सत्र में अनेक बाहरी गतिविधियाँ करवाई जाती हैं। परिसर में अधिक आगन्तुक दिखाई देते हैं और बहुत सारी अकादमिक गतिविधियाँ करवाई जाती हैं जिनमें से कुछ में बच्चे भाग लेते हैं। 19 से 25 नवम्बर के मध्य 'वृक्षारोपण सप्ताह' मनाया गया, उस दौरान बच्चों को कृषि और बागवानी से परिचित करवाया गया। बच्चों ने बगीचे के लिए अपनी ख़ुद की ज़मीन को चुना और मेथी, धनिया, पालक, चना और बैंगन जैसी मौसमी सब्ज़ियाँ बोईं।

माह	गतिविधियाँ
	वसन्तशाला में अपने प्रवास के दौरान बच्चे ही बगीचे की देखरेख करते हैं। बच्चों के पिछले बैच ने वर्मीकम्पोस्ट भी तैयार किया था। बागवानी बच्चों को प्रकृति, भूमि और कृषि के सम्पर्क में रखती है और उन्हें इससे सीख लेते हुए केन्द्र में अपना योगदान करने का अवसर प्रदान करती है। अकादमी की अपनी कैंटीन है जहाँ हम अपनी उगाई हुई चीज़ों का उपयोग करते हैं। बच्चों को खाना पकाने से सम्बन्धित सरल कार्यों को सीखने के लिए कुछ समय कैंटीन में बिताने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। इससे टीम में कार्य करने और जीवन-कौशल को विकसित करने में मदद मिलती है। वसंतशाला के शिक्षक हर सोमवार को आयोजित होने वाले हाट बाज़ार का दौरा करवाने के लिए 28 नवम्बर को बच्चों को तेजगढ़ ले गए। यह एक साप्ताहिक बाज़ार है। यहाँ समुदाय के लोग घर-गृहस्थी, कृषि, पशुपालन आदि से सम्बन्धित दैनिक जीवन की आवश्यक वस्तुओं को खरीदने और बेचने के लिए आते हैं। हाट एक सामाजिक स्थान भी है, जहाँ आसपास के गाँवों के लोग मिलते हैं, शादी-ब्याह के लिए रिश्तों के सुझाव आदि पर चर्चा करते हैं, विशेष अवसरों के लिए निमन्त्रण देते हैं, मवेशियों को बेचते हैं आदि। बच्चों को हाट में इसलिए ले जाया गया ताकि वे गाँव की अर्थव्यवस्था और सामाजिक रिश्तों को निभाने में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को समझ सकें।
दिसम्बर-जनवरी	वसन्तशाला के शिक्षक सरकारी स्कूलों के पाठ्यक्रम को पारम्परिक गीतों, कहानियों, नृत्य, संगीत और समुदायों की कला के साथ जोड़ते हैं। चूँकि कई शोधकर्ता, विद्वान और विद्यार्थी आदिवासी अकादमी में पूरे वर्ष भर आते-जाते रहते हैं, इसलिए बच्चों को उनसे बातचीत करने के अवसर मिलते हैं। इससे वे विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के सम्पर्क में आते हैं और व्यापक दुनिया के साथ घुलने-मिलने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। आदिवासी अकादमी समय-समय पर संगीत और कला कार्यशालाओं का आयोजन करती है। बच्चों को इसमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस वर्ष बच्चों ने आदिवासी अकादमी में भाषा केन्द्र द्वारा आयोजित एवं तेल और प्राकृतिक गैस निगम द्वारा समर्थित एक सप्ताह (10 से 17 दिसंबर 2016) की कला कार्यशाला में भाग लिया। भाषा केन्द्र ने तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान के आदिवासी कलाकारों को आमन्त्रित किया था। बच्चों ने चित्रकला, टेराकोटा कुम्हारी कला और मनके के आभूषण बनाना सीखने के लिए अपनी कक्षा के बाद कलाकारों के साथ समय बिताया। अपनी कला सिखाने के लिए कलाकारों ने अपने काम के बाद बच्चों के लिए विशेष सत्र आयोजित किए। इस कार्यशाला ने भारत के अन्य क्षेत्रों में प्रचलित आदिवासी कलाओं से बच्चों को परिचित कराया। इस तरह के आयोजनों से भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के प्रति जागरूकता और सम्मान भी बढ़ता है। कार्यशाला के दौरान कलाकारों ने विशेष रचनात्मकता वाले चार बच्चों को पहचाना जिनकी प्रतिभा का पोषण किया जाना चाहिए।
फरवरी	वन-भोजन अर्थात पास के स्थान पर एक दिन की पिकनिक का आयोजन किया जाता है। कुछ बड़े बच्चे अपने शिक्षकों और अकादमी के अन्य लोगों के साथ वडोदरा मैराथन की 5 किलोमीटर की दौड़ में भाग लेने के लिए वडोदरा जाते हैं। वे अपने साथ शिक्षा के महत्त्व, भाषाई विविधता और आदिवासी अधिकारों से सम्बन्धित पोस्टर ले जाते हैं।
मार्च-अप्रैल	आदिवासी समुदायों के लिए होली एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण त्यौहार है। वसन्तशाला में बच्चों को घर जाकर अपने परिवारों के साथ होली मनाने के लिए छुट्टी दी जाती है। फिर गर्मियों की शुरुआत होती है और सारा ध्यान पढ़ाई और उन बच्चों की तैयारी पर दिया जाता है जिन्हें परीक्षा के लिए नियमित स्कूलों में मुख्यधारा में लाया जाना है।

संध्या गज्जर ने एमएस यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा में अँग्रेज़ी साहित्य, भाषा विज्ञान और कला इतिहास का अध्ययन किया। कई वर्षों से वे विकास, लोकप्रिय विज्ञान और संस्कृति से सम्बन्धित मुद्दों पर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में स्वतंत्र लेखन कर रही हैं। वे भाषा अनुसन्धान और प्रकाशन केन्द्र के संस्थापक ट्रस्टियों में से एक हैं और 2015 से इसकी प्रभारी प्रबन्ध न्यासी हैं। वे नवरचना एजुकेशन सोसाइटी (1965 में स्थापित) में एक ट्रस्टी और कार्यकारी समिति की सक्रिय सदस्य भी हैं, जो वडोदरा में चार स्कूलों और एक विश्वविद्यालय का प्रबन्धन करती हैं। उनसे sandhyagajjar@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

सोनल बक्षी सामाजिक विज्ञान में डॉक्टरेट हैं। उन्होंने आदिवासी, विमुक्त और घुमन्तू समुदायों के साथ काम किया है। वे साहित्यिक पृष्ठभूमि रखती हैं। उनके अनुभवों में शामिल हैं शिक्षा, कला व संस्कृति, मानव अधिकार और विकास जैसे विविध क्षेत्रों में अनुसन्धान और ज़मीनी स्तर के हस्तक्षेप। वे अनुदान संचयन, परियोजना प्रबन्धन और प्रकाशन जैसे क्षेत्रों में भी विशेषज्ञता रखती हैं। उनसे sonal.bhasha@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : नलिनी रावल